अध्याय 38

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **यहोशू 5:13-8:35**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 5:13-8:35)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **प्रभुता : रोमियों 12:1-2**

याद करने वाले वचन की चौथी श्रंखला "शिष्यता" के बारे में है। पाँच याद करने वाले पदों का शीर्षय है: प्रभुता,इनकार,सेवा,देना और शिष्य बनाना।

क-ध्यान करना

रोमियों 12:1-2; 6:13,19 **पढ़ें।** "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ की अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनों; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चालचलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली,भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो..और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार हाने के लिए परमेश्वर को सौंपो...जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिए अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था,वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौंप दो।"

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

प्रभुता रोमियों 12:1-2
इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ की अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनों; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चालचलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली,भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो । रोमियों 12:1-2

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. बलिदान चढ़ाने का आधार

यह अनुच्छेद," इसलिए... मैं परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर से शुरू होता है"। यह वाक्य उन सारी बातों को आपस में जोड़ देता है जो अध्याय 1 से 11 में लिखी गयी हैं। मसीही लोग अपने शरीरों को परमेश्वर के लिए एक जीवित बलिदान के रूप में चढ़ा सकते हैं,क्योंकि पहले परमेश्वर ने मसीहियों के लाभ के लिए अपने इकलौते बेटे को बलिदान के रूप में चढ़ा

दिया! परमेश्वर कभी भी मसीहियों से किसी ऐसी बात करने के लिए नहीं कहते जिसको करने की क्षमता पहले परमेश्वर ने उन्हें न दी हो! परमेश्वर ने पहले हमारे लाभ के लिए मसीह को एक बलिदान के रूप में चढ़ाया है इसलिए अब वह हमें अपने जीवनों को जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए कह रहा है।

2. हमारे शरीरों का समर्पण।

शरीर। यहां पर "शरीर" का मतलब केवल हमारी देह से नहीं है। परन्तु इसका अर्थ हमारी आत्मा, हमारे पूरे अस्तित्व व व्यक्तित्व से है, क्योंकि हमारी देह और उसके सारे अंग मिलकर हमारी आत्मा, हमारे व्यक्तित्व व हमारे अस्तित्व को प्रगट करते हैं। हमारी देह के अंग केवल वे माध्यम हैं जिनके द्वारा हम परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करते हं। इस जीवन में हमारी देह व हमारा प्राण मिलकर एक ईकाई को बनाने हैं जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता। हमारा प्राण जीवन की श्वांस या हमें सजीव रखने वाली शक्ति है। यह मानवता का अभौतिक व अदृश्य तत्व है, खास तौर पर जब हम इस धरती पर बसने वाले जीवन व हमारी देह के बारे में बात करते हैं। यह हमारी आत्मा के समान ही होता है,जो मानवता का अदृश्य व अभौतिक तत्व है, लेकिन अभी विशेष तौर पर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में।

जीवित बलिदान। पुराने नियम में,सारे बलिदान पशु बलि द्वारा ही दिये जाते थे,लेकिन नये नियम में ये बलिदान मनुष्यों के रूप मं चढ़ाये जाते हैं न कि पशुबलि के रूप में। पुराने नियम में, सारे पशुबलि को मार दिया जाता था, लेकिन नये नियम में इन बलियों को मारने की बजाय जीवित रखा जाता है। पुराने नियम में विशेष उपलक्ष्यों पर बलिदान चढ़ाया जाता था,लेकिन नये नियम में मानवीय बलिदान किसी उपलक्ष्य पर नहीं वरन नियमित तौर पर चढ़ाया जाता है। परमेश्वर को जरूरत नहीं है कि मनुष्य परमेश्वर के लिए अपना वध करे, वरन वह चाहता है कि मनुष्य उसके लिए जिये।

लेकिन, परमेश्वर के लिए जीवता बलिदान चढ़ाना तभी सम्भव हो सकता है जब हम ने मसीह में नया जीवन प्राप्त किया हो। हमारा पुराना स्वभाव कभी नहीं मरना चाहता। वह तो पाप का मज़ा लेना और स्वार्थी अभिलाषाओं से सन्तुष्ट होना चाहता है। वह तो "बस खाना,पीना, और आनन्दित होना चाहता है"(1 कुरिन्थियों 15:32) और हर प्रकार की खुशी बाहर निकाल देना चाहता है। हमारा पुराना मनुष्यत्व केवल अपने लिए ही जीवन व्यतीत करना चाहता है! या फिर हमारा पुराना स्वभाव, बुरी आदतों,पागलपन या आतंकवाद में लापरवाही के से जीवन व्यतीत करके खुद को मारता है।
जब यीशु मसीह हमारे हृदय और जीवन में वास करने के लिए आते हैं,हमारा पुराना स्वभाव क्रूस पर कीलों से ठांक दिया जाता है और उसके वहां ही रहना चाहिए। यीशु मसीह का आत्मा हम में आकर बसता है और हमारे भीतर एक नया स्वभाव उत्पन्न करता है, जिसे हम "नये जन्म" के रूप में अनुभव करते हैं। हमारे नये स्वभाव में यीशु मसीह का व्यवहार व यीशु मसीह व दूसरों की सेवा करते हुए नि:स्वार्थ भावना के साथ जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रवेश कर जाती है।

पवित्र बलिदान। *पवित्र* शब्द का अर्थ बुराई से दूर व परमेश्वर के लिए समर्पित होता है। पवित्र आत्मा का काम हमारे भीतर सब प्रकार के पापों के प्रति घृणा उत्पन्न करता तथा हमें परमेश्वर की निगाहों में निष्कलंक जीवन व्यतीत करने के लिए समर्पित बनाता है। परमेश्वर के सभी गुणों में पवित्रता पायी जाती है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर का प्रेम पवित्र है। वह पूरी तरह से किसी भी तरह के पाप से अछूता होता है। वह स्वार्थी नहीं है,वह किसी का पक्षपात नहीं करता, और वह किसी भी प्रकार से यौन सम्बन्धी अनैतिकता से जुड़ा हुआ नहीं हो सकता। इसी तरह,परमेश्वर की धार्मिकता पवित्र है। वह किसी भी प्रकार के अन्याय से रहित है। वह स्पष्ट तौर पर प्रगट किये गये मूल्यों व व्यवस्थाओं पर आधारित है; यह पूरी तरह से साफ व निष्पक्ष है। इस तरह, परमेश्वर का सत्य, उसकी दया, उसकी विश्वासयोग्यता व परमेश्वर के दूसरे चरित्र पूरी तरह से पवित्र हैं। अब, परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीही लोग भी अपने अपने जीवनों में उसी के समान पवित्रता को प्रगट करें। पवित्र आत्मा की सहायता से वह हमें पवित्र जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाता है।

परमेश्वर को भावता बलिदान। *भावता* शब्द का अर्थ परमेश्वर द्वारा ग्रहण किया जाने वाला व परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला। हम मसीही लोग जहां कहीं भी जाएं, हमें अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए,"क्या यह स्थान या ये लोग जिनके साथ मैं संगति करता हूँ, परमेश्वर को भाते हैं"? "यीशु मसीह ने इस परिस्थिति में क्या किया होता?" हम इस प्रश्न का जवाब केवल अधिक से अधिक बाइबल पढ़कर या उसका अध्ययन करने के द्वारा दे सकते हैं। परमेश्वर ज्यादातर अपने वचनों व अपनी आत्मा के द्वारा परमेश्वर को भावता हुआ जीवन जीने में मसीहियों की सहायता करते हैं।

आत्मिक आराधना या आत्मिक सेवा। आत्मिक शब्द का सबसे उत्तम अनुवाद *सही या उपयुक्त* हो सकता है। अत: जब हम मसीही लोग अपने आप को परमेश्वर के लिए जीवित, पवित्र व परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाते हैं,तो हम वही काम करते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में सही व उपयुक्त होत हैं। यही वास्तव में एक मसीही आत्मिक जीवन है। एक मसीही तब आत्मिक नहीं है जब वह अपने आप को बहुत गम्भीर या भावुक अवस्था में प्रगट करता है, लेकिन जब वह अपने सम्पूर्ण जीवन को एक जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाता या देता है तब वह आत्मिक है। वह केवल मसीही सभाओं में ही आत्मिक नहीं होता, वरन वह अपने सप्ताह के हर दिन में आत्मिक जीवन व्यतीत करने वाला जन होता है।

3. हमारे प्राण का समर्पण।

संसार के सदृश बातों को "ना" बोलें। हम अपने आपको इस बुरे व दुष्ट युग के अनुसार नहीं ढालते। हम अनुमति नहीं देते कि यह बुरा संसार हमें अपने सांचे में ढालने का प्रयास करे। सच्चे मसीही किसी भी प्रकार से संसार की सदृश्यता के प्रभाव से बचने का प्रयास करते हैं: जैसे नास्तिकता की विचारधारा,झूठे धर्म, यौन अनैतिकता, बुरी संगति, चुगलखोरी, अश्लील पत्रिकाओं को पढ़ना,आपत्तिजनक गतिविधियां, उकसाने वाले वस्त्र,रूढ़ीवादी राजनीति,नशीले पदार्थो के साथ प्रयोग करना,जान लेवा खेल इत्यादि। सच्चे मसीही हर एक बुरे प्रभाव का विरोध करते हैं। दूसरों के बाहरी जीवन व उनके व्यवहार का आकर्षण एक शक्ति का काम कर सकती है जो हमें परमेश्वर से दूर करके ऐसे आचरण व जीवन शैली को व्यतीत करने पर मज़बूर कर दे जिसे परमेश्वर पसन्द नहीं करते। हम किसी भी प्रकार से बुरे संसार के आकर्षण या गलत चीजों की ताका झांकी को हमें आकार देने की अनुमति प्रदान नहीं करते हैं। हम भद्दी व ठोकर पहुंचाने वाली भाषा का इस्तेमाल नहीं करते। हम गन्दे, अश्लील संगीत को नहीं सुनते। हम बेकार व अश्लील पत्रिकाओं को नहीं पढ़ते। हम भड़कीले वस्त्र नहीं पहनते। हम आपत्तिजनक परिस्थितियों या गतिविधियों का भाग नहीं बनते। हम सासांरिक लोगों के साथ अति घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं बनाते।

परमेश्वर की इच्छाओं से जुड़ी आन्तरिक रूपान्तरण को "हाँ" बोलें। हम लगातार अपने मन को नया हो जाने की प्रक्रिया के लिए समर्पित करते हैं। जिस प्रकार सदृश्यता लोगों के बाहरी तौर तरीकों को अनुपालन करने से होती है, उसी प्रकार रूपान्तरण आन्तरिक परिवर्तन या विचारों,विश्वास,सोच,उद्देश्यों व परमेश्वर के वचन के अनुसार स्वभाव के बदलने से प्रारम्भ होता है। यह तब सम्भव होता है जब हम अपने आपको परमेश्वर के वचनों व उसकी आत्मा के साथ चलाने के लिए समर्पित करते हैं। आन्तरिक रूपान्तरण असल में बाहरी परिवर्तन द्वारा प्रगट होता है और बाहरी व्यवहार परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन को व्यतीत करने का सबसे उत्तम तरीका है।

4. बलिदान चढ़ाने के बदले में परमेश्वर की प्रतिज्ञा।

पांच प्रमुख आवश्यकताएं हैं जिनके लिए हमें परमेश्वर की इच्छा को समझने व उसके ग्रहणयोग्य ठहरने की जरूरत है।

- यूहन्ना 15:5. परमेश्वर के साथ घनिष्ट व व्यक्तिगत रिश्ते में बने रहने का प्रयास करना।
- लूका 6:46-49 बाइबल में प्रगट परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ इच्छा का पालन करने के लिए।
- रोमियों 8:28. परमेश्वर की उस अप्रगट इच्छा के प्रति समर्पित होना जिसे परमेश्वर ने परिस्थितियों के माध्यम से प्रगट किया हो।
- रोमियों 12:2 मन के नये या रूपान्तरित हो जाने के लिए।

इसी कारण हम कुछ चीज़ों से परहेज़ करते, बुरी बातों को बन्द करते तथा भले कार्यों को करना आरम्भ कर देते हैं।

- रोमियों 12:1. त्यागपूर्ण निर्णय लेने के लिए। अपने हक की बात या मांग करने की बजाय, हम दूसरों की भलाई ही चाहते हैं। हमारे परिवार की कुर्बानी चढ़ाकर अपनी जीविका सुनिश्चित करने की बजाय हम अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों को उठाने का समर्पण करते हैं। हम धार्मिक,शक्तिशाली और प्रतिष्ठित लोगों के उपकारों को ही उतारने की बजाय हम गरीबों, विकलांगों और बोझ से दबे हुए लोगों को अपने जीवन में आमन्त्रित करते हैं(लूका 14:12-14)।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***

2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** प्रभुता: रोमियों 12:1-2.

3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट)	***[संसार में जीवन बिताना]***
		संसार में धन : 1 तीमुथीयुस 6:3-19

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए 1 तीमुथीयुस 6:3-19 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 तीमुथीयुस 6:3-19 को एक साथ पढं।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस मं बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

6:6

खोज 1. संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।

पहले मैं ऐसा सोचा करता था कि ज्यादा पैसे कमाना बड़ी कमाई है। लेकिन अब मैं देखता हूँ कि भक्ति और संतोष, धन या सम्पत्ति की तुलना बहुत बड़ी कमाई है। मैं खोजना चाहता हूँ कि किस प्रकार से कोई व्यक्ति संतोष मय व भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

6:18-19

खोज 2. परमेश्वर के राज्य में निवेश करें।

चाहे मैं अमीर हूँ या गरीब, लेकिन मेरे लिए आने वाले समय अर्थात स्वर्ग के लिए पैसों को निवेश करना ज़रूरी है। मैं परमेश्वर के राज्य में सबसे बेहतर निवेश करने का तरीका सीखना चाहता हूँ, ताकि मैं सच में स्वर्ग में अपना धन संचय कर सकूँ जहाँ पर न तो कीड़ा लगा है और न ही को धन को चुरा सकता है।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?
आईये हम 1 तीमुथीयुस 6:3-19 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।
लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को

अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

6:5

प्रश्न 1. झूठे शिक्षक किस प्रकार से भक्ति को कमाई का जरिया समझते हैं?

ध्यान दें। प्रथम शताब्दी के दौरान,बहुत से ऐसे झठे शिक्षक थे जो अनजान शिक्षाओं व अपनी ही काल्पनिक कथाओं को बाइबल के सत्य के साथ मिलाकर देने में मग्न थे। उनके बाल की खाल निकालने वाले वाद विवाद यहूदियों की व्यवस्था व उनकी वंशावली से जुड़ी कहानियों से जुड़े हुए थे। वे उत्पत्ति की पुस्तक या इतिहास में दी गयी वंशावली में से किसी का भी नाम लेकर उस पर एक बढ़िया मनगड़न्त कहानी बना दिया करते थे। यह यहूदी आराधनालय में होने वाली नियमित आराधना का भाग था, जिसे बाद में हगादाह व तालमुद नामक यहूदी शास्त्रों में लिखा गया। उन्होंने अपने झूठे कहानी किस्सों की बदौलत काफी धन कमाया। उन्होंने पहले तो उनके धर्म को प्रदर्शित किया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उनके बारे में जान जाएं। उसके बाद उन्होंने धार्मिक पाठयक्रम का आयोजन किया जिसके लिए वे काफी ज्यादा फीस रखा करते थे। इस तरह से उन्होंने नाम मात्र की भक्ति का इस्तेमाल धनी बनने के लिए किया। इन झूठे धार्मिक समूहों ने अपने धर्म को लोगों में बेच दिया। हमारे दिनों में भी इस प्रकार के झूठे भविष्यद्वक्ता बहुतायत से सक्रिय हैं। वे आज भी अपने धर्म को लोगों में बेच रहे हैं। हर जगह पर वे अपने धार्मिक पाठयक्रम को रखते हैं और लोगों से काफी अधिक शुल्क वसूल करते हैं। दूसरे प्रकार के झूठे धार्मिक समूह धन के द्वारा लोगों की निष्ठा खरीद लेते हैं या मंहगे तोहफों के द्वारा लोगों को प्रलोभन देते हैं। उदाहरण के लिए वे लोगों से कहते हैं कि,"यदि आप हमारे डोटा मैनुएल 4-अध्याय 38 पेज़ संख्या 3 के धर्म को अपनाते हैं, तो हम आपको उपहार के रूप में टेलीविजन या एक नौकरी देंगे"। इस प्रकार के सभी झूठे धार्मिक समूहों से सावधान रहें!प्रकाशितवाक्य 21:8 में लिखा है कि "*सारे झूठों* का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहतो है।"

6:10

प्रश्न 3. धन के प्रेम को सब बुराईयों की जड़ क्यों कहा गया है?

ध्यान दें। धन अपने आप में बुराई की जड़ नहीं है, लेकिन धन के प्रति लोगों का प्रेम सारी बुराईयों की जड़ है। पैसों का प्रेम ही सारी बुराईयों के जड़ नहीं है,क्योंकि कड़वाहट के कारण भी बहुत सी बुराईयां उत्पन्न हो सकती हैं(इब्रानियों 12:15)।

बाइबल में हम पढते हैं कि किस प्रकार धन ने बहुत सी बुराईयों का उत्पन्न किया। मरकुस 10:21-22 में एक धनी व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण करते करते अचानक वापस मुड़कर चला गया, क्योंकि उसे अपना धन यीशु मसीह से अधिक प्यारा था। लूका 16:19-31 में, एक धनी व्यक्ति ने लाज़र नामक गरोब जन पर किसी प्रकार की भलाई प्रगट नहीं की। वह मर कर अपने स्वार्थी जीवन के कारण नरक में गया। लूका 22:1-6, यहूदा पैसों के कारण यीशु मसीह को पकड़वाने के लिए तैयार हो गया। उसने बाद में आत्महत्या कर ली। प्रेरितों 5:1-11 में हनन्याह और सफीरा ने पैसों को लेकर झूठ बोला और वे तुरन्त उनका प्राण छूट गया। याकूब 5:1-6 में कुछ धनी लोगों ने धन बटोर कर रख लिया, उन्होंने भोग विलास में जीवन व्यतीत किया, लेकिन उन्होंने अपने वहां मज़दूरी करने वाले लोगों को उनकी मज़दूरी नहीं दी। उन्होंने धनी होने की चाह में मासूम लोगों को कत्ल तक कर डाला। यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि वे अपने जीवन के अन्त में, नरक में इसी प्रकार से घात किये जाएंगे।

धन से प्रेम के चलते बहुत लोग धन प्राप्त करने या दहेज मांगने की इच्छा से विवाह कर रहे हैं,जिसकी वजह से बहुत सी वैवाहिक परेशानियां खड़ी हो रही हैं। धन से प्रेम के कारण व्यापार जगत में धोखेबाज़ी,घूसखोरी हो रही है तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। धन के प्रेम के कारण ही राजनेता झूठ बोलते, पैसों के घोटाले करते तथा धनी होने के लिए अपने ही देश को बर्बाद कर देते हैं। धन के पम के कारण ही लोग लौटरी व जुआ खेलते तथा पैसा कमाने की योजनाओं में धन लगाने के परिणाम स्वरूप अत्यधिक कर्ज में दब जाते हैं। धन के लालच में लोग पैसे देने वाले धर्मों को स्वीकार कर लेते हैं। धन के प्रेम के कारण ही लोग चोरी करते,लूटते और हत्या करते हं।निश्चय ही पैसों का प्रेम सारी बुराईयों की जड़ है!

6:10

आपके जीवन में धन का कैसा प्रभाव पड़ सकता है?

ध्यान दें।

पैसा कभी भी आपको सन्तुष्ट नहीं कर सकता। सभोपदेशक 5:10-17 में हम पढ़ते हैं,"जो कोई धन को प्रेम करता है उसके पास कभी पर्याप्त धन नहीं होता, जो सम्पत्ति से प्रेम करता है वह कभी अपनी आमदनी से सन्तुष्ट नहीं होता...उसके खाने वाले भी बढ़ते हैं.. धनी का धन बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती।" धन न तो कभी आपको सन्तुष्ट कर सकता और न ही आपके जीवन में शान्ति प्रदान कर सकता है।

धन परमेश्वर के वचन को आपके जीवन से दूर रख सकता है। मरकुस 4:18-19 में हम एक बीज बोने वाले किसान के बारे में पढ़ते हैं,जो अपने कुछ बीजों को कटीली झाड़ियों के बीच में बोता है। यह उन लोगों को दर्शाता है जो लोग परमेश्वर के वचन को सुनते तो हैं, लेकिन जीवन की चिन्ताएं, सम्पत्ति का छल और अन्य चीज़ों की अभिलाषाएं परमेश्वर के वचन को दबा देती, तथा उसे फलहीन बना देती हैं। धन और सम्पत्ति आपके जीवन से परमेश्वर के वचन को दूर कर सकते हैं,जिससे परमेश्वर के वचन का आपके जीवन पर कोई प्रभाव न पड़े।

धन आपको आपके जीवन की प्राथमिकताओं से वंचित करवा सकता है। लूका 12:13-21 में हम एक धनी व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जिसने बहुत अच्छी खेती करके अच्छी उपज पायी। उसने निर्णय लिया कि अब वह बड़ो बखारियां बनायेगा और उसमें अनाज रख कर चैन करेगा। उसने अपने आप से कहा "तेरे पास बहुत वर्षो के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है;चैन कर,खा,पी, सुख से रह।" लेकिन परमेश्वर ने कहा," हे मूर्ख! आज की राज तुझ से तेरा प्राण ले लिया जाएगा। तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह किस का होगा?" ऐसा ही प्रत्येक उस व्यक्ति के साथ होगा जो इस संसार में तो धन संचय करता है परन्तु परमेश्वर के लेखे में धनी नहीं है। धन और सम्पत्ति आपको कई बार आपकी प्राथमिकताओं से गुमराह कर सकती है जो प्राथमिकताएं परमेश्वर को प्रेम करना तथा परमेश्वर की सेवा करना है ।

धन आपको मूर्तिपूजक बना सकता है। मत्ती 6:24 में हम पढ़ते हैं कि,"कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से प्रेम और दूसरे से बैर रखेगा,या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर व धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो।" धन व सम्पत्ति(भौतिकवाद) आपको मूर्तिपूजक बनाकर भगवान धन की पूजा करवा सकता है। संक्षेप में, धन व सम्पत्ति का मसीहियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। बाद में हम पढ़ेगें कि मसीही लोग अच्छा प्रभाव डालने के लिए धन का इस्तेमाल किस प्रकार कर सकते हैं।

6:10

प्रश्न 4. भ्रष्टाचार क्या है?

ध्यान दें।

भ्रष्टाचार के अनेकों प्रकार। भ्रष्टाचार का अर्थ अनुचित तरीके से धर्म व सम्पत्ति अर्जित करना और गलत तरीके से उनका इस्तेमाल करना है। उदाहरण के लिए, जब आप चुराते या डाका डालते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(लैव्य. 19:11-13)। जब आप किसी से पैसे मांग कर उसे वापस नहीं करते तो आप भ्रष्ट हैं(भजन 37:21)। जब आप अपने कर्मचारियों को पैसा नहीं देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं (याकूब 5:4)। जब आप बेईमानी करते व धोखा देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप अन्याय करके धन या किसी और चीज़ को हासिल करते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(नीतिवचन 11:2;16:8)।लौटरी बेचकर धन कमाना या जुआ खेलना गलत ढंग से पैसा कमाने के कुछ उदाहरण हैं। अधर्म से इकट्ठा किये गये धन से कोई लाभ नहीं(नीतिवचन 10:2) और उनका प्राण लालच के कारण नष्ट भी हो जाता है(नीतिवचन 1:19)। जब आप घूस देते या लेते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(नीतिवचन 17:8,23) मसीहियों को जानना जरूरी है कि किसी भी प्रकार की घूस भ्रष्टता है! आप यदि किसी चीज़ का सौदा करने के दौरान कोई उपहार देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं! जब आप न्यायालय में न्यायधीश को पैसे देते हैं या न्यायपालिका के किसी सदस्य को अपने पक्ष में न्याय करवाने के लिए पैसे देते हैं या किसी अनचाहे विरोधी को हटाना चाहते हैं, तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप लोगों को अपने धर्म में शामिल करने के लिए धन देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप पैसों पर बहुतायत से ब्याज़ लेते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(नीतिवचन 28:8)। जब आप लोगों को पैसे देने क लिए परेशान करते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप भोजनालय, दुकानों और व्यापारियों से हफ्ता लेते हैं तो आप भ्रष्ट है! जब आप गैर कानूनी तरीके से सिगरेट व मादक पदार्थो को बेचते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप खरीदे गये सामान के लिए झूठे बिल बनाते और झूठे प्रमाणपत्र प्रदान करते हैं तो

आप भ्रष्ट हैं। जब आप नकली नोट छापते या नकली क्रेडिट कार्ड बनाते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। यदि आप कपड़े धोते समय पैसे रख लेते हैं, तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप कर चुकता करने में टालमटोली करते हैं तो आप भ्रष्ट हैं।

भ्रष्टाचार का दण्ड । परमेश्वर भ्रष्टाचार से घृणा करता है। परमेश्वर निश्चय ही भ्रष्टाचार व बेईमानी को दण्ड देगा। उन लोगों का क्या होगा जो लोग घूस लेते और देते है और भ्रष्ट हैं? बाइबल हर एक भ्रष्ट व्यक्ति को चेतावनी देती है कि वह एक बढ खतरे में है! जब वह जन घूस देता या लेता है तो वह नैतिक तौर पर भ्रष्ट हो जाता है और परमेश्वर की निगाहों में अधर्मी ठहरता है। अपराधियों की मदद करने तथा निर्दोष के दु:ख में बढ़ौतरी करने वाला जन अपने परिवार के लिए परेशानियों को कमाता है। उसके कारण उसकी कलीसिया,उसका नगर व उसका देश उजाड़ हो जाएगा। सबसे बुरा दण्ड यह है कि परमेश्वर खुद उसे शापित करता है(व्यवस्थाविवरण 27:25),परमेश्वर उसके परिवार व उसकी सम्पत्ति को नाश करेगा(अय्यूब 15:34)और अन्त में परमेश्वर उसे नरक के कुण्ड में फेंक देगा,क्योंकि उसके कारण दूसरों ने भी पाप किया(मत्ती 18:7-9)!

6:6-12

प्रश्न 5. एक आम मसीही की जीवन शैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

ध्यान दें।

मसीहियों को सभी परिस्थितियों में सन्तुष्ट रहना चाहिए। धनी होने की चाह हमें भक्ति से दूर रखती है वरन वंचित कर देती है। परन्तु अगर आप जो कुछ आपके पास है उसमें सन्तुष्ट हैं तो आप भक्ति में बढ़ते हैं। मसीहियों को यह पहिचानना चाहिए कि जब वे इस संसार में पैदा हुए थे तो वे अपने साथ कुछ लेकर नहीं आये थे। और न ही वे अपनी मृत्यु के समय अपने साथ कुछ ले जा सकते हैं। धन एक अस्थायी सम्पत्ति है। भक्ति का समर्थन करने के लिए मसीहियों को यह सोचना चाहिए कि वे अपने जीवन के अल्प काल में धन का इस्तेमाल किस प्रकार से करें। मसीहियों को कभी भी अत्यधिक धन कमाने से प्रेम नहों करना चाहिए,वरन जो कुछ उन्हें परमेश्वर की ओर से मिला है उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य की उन्नति के बारे में सोचना चाहिए(1तीमुथीयुस 6:17-19)। यदि मसीहियों के पास खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र और रहने के लिए घर हो तो इसी में सन्तुष्ट रहना चाहिए।

मसीहियों को धन के प्रेम से दूर रहना चाहिए। मसीही लोग 'धन के भूखे लोग' नहीं वरन 'परमेश्वर के लोग' हैं। वे धन की मांग को पूरा न करके परमेश्वर की आज्ञाओं का अनुपालन करने वाले लोग हैं। मसीहियों को झूठी शिक्षाओं, बुराई करने, डाह, क्लेश, चिकनी चुपड़ी बातों, शक करने,भ्रष्टाचार,दुष्टता,असंतोष और अधिक धन कमाने की चाह से परे रहना चाहिए। मसीहियों को भक्ति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। मसीहियों का धार्मिकता, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, कृपा जैसी बातों का पीछा करना व उन्हें हासिल करने का प्रयास करना चाहिए(मत्ती 6:33)। धीरज, आशा का फल है(1 थिस्लुनिकियों 1:3)। विश्वास का अर्थ परमेश्वर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर निर्भर होना है(इब्रानियों 11)। विश्वास, प्रेम और आशा मसीही जीवन के प्रमुख तत्व हैं(रोमियों 5:2-5; 1 कुरिन्थियों 13:13; गलातियों 5:5-6; इफिसियों 4:2-5; कुलुस्सियों 1:4-5; 1 थिस्लुनिकियों 1:3; 5:8; इब्रानियों 6:10-12)।

मसीहियों ने विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़नी चाहिए। यह वचन हमें हर प्रकार की प्रतिस्पद्धा (1 कुरिन्थियों 9:25; इब्रानियों 12:1) या आत्मिक संघर्ष (फिलिप्पियों 1:30; 1 थिस्लुनिकियों 2:2) के बारे में बोलता है। विश्वास का अर्थ एक बार फिर परमेश्वर व उसके वचनों पर पूरी रीति से निर्भर होना है। मसीहियों को हमेशा के लिए अनन्त जीवन पर पकड़ बना लेनी चाहिए। मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करते ही वे अनन्त जीवन के अधिकारी हो गये थे। उन्हें किसी भो कीमत पर इसे अपने हाथों से जाने नहीं देना चाहिए।

मसीहियों को उस लक्ष्य को पूरा करने के में तत्पर रहना चाहिए जो उन्हें मिला है। इस पत्र में तीमुथीयुस को मण्डली के लिए मसीह में जीवन व्यतीत करने का आदर्श बनने तथा मण्डली की अगुवाई करने की जिम्मेदारी को आगे सौंपने का काम दिया गया था। मसीहियों को परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को इस तरीके से पूरा करना चाहिए कि कोई उन पर नज़रअन्दाज़ करने का आरोप न लगा सके।

6:17-19

प्रश्न 6. धनी मसीहियों की जीवन शैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

ध्यान दें। मसीहियों के लिए धनी होना कोई पाप या गलत बात नहीं है, लेकिन किसी भी मसीही के लिए धन की अभिलाषा रखना गलत है। मसीही जन के लिए पैसों के पीछे भागना गलत है। मसीही जन के लिए किसी भ्रष्ट तरीके का इस्तेमाल करके धनी बनना गलत है।

यदि परमेश्वर ने किसी मसीही जन के हाथों में बहुत सी आशीषों व जिम्मेदारियों को सौंपा हो तौभी वह जन धन की लालसा करे तो यह गलत है। मसीही जन को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने यह सारी धन धान्यता को उसके हाथों में इसलिए सौंपा है, क्योंकि वह चाहता कि वह चाहता है कि आप उसके द्वारा दिये गये धन से कुछ करें। परमेश्वर ने धनी मसीहियों के लिए उसके राज्य में करने हेतू एक विशेष मकसद रखा है।

धनी मसीही क्या नही कर सकते। मसीही जन अपने धन पर घमण्ड व उसके कारण आत्म-सन्तुष्ट नहीं हो सकते। वे अपने धनी होने पर अभिमानी या अक्खड़ नहीं हो सकते। वे परमेश्वर पर निर्भर होने की बजाय अपनी सम्पत्ति पर निर्भर नहीं हो सकते।

धनी मसीही क्या कर सकते हैं। मसीही लोग उन सारी आशीषों व धन सम्पत्ति का आनन्द उठा सकते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है।

धनी मसीहियों को क्या करना आवश्यक है। धनी मसीहियों को भलाई करने में आगे रहना चाहिए। उन्हें अपनी आशीषों को दूसरों के साथ बांटने में उदार और इच्छुक होना चाहिए। धनी मसीहियों को आने वाली पीढ़ी के लिए विरासत छोड़नी चाहिए। इसका अर्थ है कि उनकी भलाई या दान केवल सासांरिक वस्तुओं को ही प्राप्त करने के लिए नहीं वरन परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए होनी चाहिए।

इस कारण धनी मसीहियों को एक विशेष लक्ष्य दिया गया है। उन्हें अपने धन को बुद्धिमानी के साथ परमेश्वर के राज्य में निवेश करना चाहिए। उदाहरण के लिए, वे अपनी सम्पत्ति को जरूरत मन्द मसीही मण्डली के साथ साझा कर सकते हैं। अकाल के वक्त, ग्रीस व मकिदूनिया की मण्डलियों ने फिलिस्तीन की मण्डली की सहायता की। धनी मसीही मिश्नरियों, मिश्नरी कार्यो व मिश्नरी योजनाओं की सहायता कर सकते हैं। ऐसा वर्तमान में बहुत सी जगहों पर हो रहा है।

प्रश्न 7. उच्च पदों पर आसीन मसीहियों की जीवन शैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

ध्यान दें।

दानिय्येल 6:3-4 में हम पढ़ते हैं "जब यह देखा गया कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन राजा यह भी सोचता था कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराए। यह अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरूद्ध दोष ढूँढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य था,और उसके काम में कोई भूल या दोष न निकला,और वे ऐसा कोई अपराध या दोष न पा सके।"

आज की तारीख में व्यापार जगत में, सरकार के शासकों में और धर्म में बहुतायत से भ्रष्टाचार पाया जाता है। इस भ्रष्टाचार की वजह से लोगों के जीवन में अत्यधिक दु:खों का पहाड़ टूट पड़ता है जबकि भ्रष्ट लोग धनी व शक्तिशाली बन जाते हैं। जबकि बहुत से लोग पकड़े गये हैं और उन्हें अपमानित हाना पड़ा है।

दानिय्येल इसी प्रकार की परिस्थितियों में रहा लेकिन वह फिर भी इन सब बातों से अलग था। दानिय्येल को एक ऐसे अधिकारी के रूप में जाना जाता था जो सरकारी मुलाजिम तो था लेकिन भ्रष्ट नहीं था। जिसके कारण उसे व्यक्तिगत तौर पर व अपनी नौकरी तथा अपने पद को लेकर काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ां। उसके साथ काम करने वाले उसे नीचा दिखाने या फंसाने के लिए षणयन्त्र रचने लगे। वे परमेश्वर पर उसके विश्वास को लिए उसके खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करने लगे। और जिसके परिणामस्वरूप उसे अन्त में सिहों की माँद में डाल दिया गया। लेकिन, चाहे दानिय्येल को कितनी भी तकलीफों को सामना करना पड़ा अन्त में, परमेश्वर ने उसका आदर किया। इस कारण बाइबल मसीहियों को दानिय्येल के समान बनने क लिए कहती है। अपने आप को इस संसार में एक मसीही व्यापारी, मसीही सरकारी अधिकारी या एक मसीही साबित करना एक लक्ष्य है। अपने आप को ईमानदार, भरोसेमन्द और अपने लक्ष्य के प्रति कभी भी लावपरवाह नहीं साबित करने का प्रयास करें। इस संसार के भ्रष्टाचारियों से अलग दिखने का प्रयास करें।

कदम 4. उपयोग **इस्तेमाल**
ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1 तीमुथीयुस 6:3-19 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1.तीमुथीयुस 6:3-19 से इस्तेमाल की जाने वाली सम्भव बातों के उदाहरण।

6:3 झूठी शिक्षा देने वाले लोगों से बचें। उन्हें अपने घर में भी न आने दें(2 यूहन्ना 10-11)

6:4 उन लोगों से भी दूर रहने का प्रयास करें जिन्हें विवाद और शब्दों पर तर्क करने,झगड़ा करने व दूसरे मसीहियों पर तर्क करने का रोग हो गया है।

6:5 उन लोगों से दूर रहने का प्रयास करें जो भक्ति के द्वारा धन कमाने की कोशिश करते हैं(उदाहरण के लिए, ऐसी भक्ति जो केवल समृद्धि के सुसमाचार को सुनाती व परिवर्तित होने के लिए लोगों को लालच देती है)।

6:6-8 अगर आपके पास खाने के लिए भोजन व पहनने के लिए वस्त्र हो तो उसी में सन्तुष्ट रहें।

6:6-8 पैसे से कभी प्रेम न करें। कभी धनी होने का प्रयास न करें। इस प्रकार की लालसाओं से भागें।

6:9-11 धार्मिकता,भक्ति,विश्वास,प्रेम,धीरज और नम्रता का पीछा कर।

6:12 परमेश्वर के वचनों और उसके वायदों पर भरोसा रखते हुए एक पहलवान के समान अच्छी कुश्ती लड़।

6:14. उस आदेश का पालन कर जिसे परमेश्वर ने तुझे दिया है।

6:17 मसीही अगुवों को धनी लोगों को सिखाना चाहिए कि वे धनी व शक्तिशाली होने के कारण घमण्ड न करें।

6:18 मसीही अगुवों को धनी लोगों को सिखाना चाहिए कि भलाई करने मे आगे रहें और अपनी आशीषों को सदैव जरूरतमन्द लोगों के बीच में बांटा करें।

6:19 मसोही अगुवे धनी मसीहियों को आज्ञा दें कि वे परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए अपनी धन सम्पत्ति का इस्तेमाल करें और इस तरह से स्वर्ग के खजाने में निवेश करें।

2.तीमुथीयुस 6:3-19 से व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली व्यवहारिक बातों का उदाहरण।

मैं उस सम्पत्ति का भला भण्डारी होना चाहता हूँ जिसे परमेश्वर ने मेरी देख रेख में रखा है। मैं अपने भोजन, कपड़े और घर को लेकर सन्तुष्ट होना चाहता हूँ। और मैं अपने अतिरिक्त धन को परमेश्वर के राज्य में खर्च करना चाहता हूँ। मैं अपने पड़ोस में रहने वाले गरीब मसीही परिवारों की और उन लोगों की सहायता करना चाहता हूँ, जो मसीही मण्डलियों को बढ़ाने के लिए सुसमाचार प्रचार करने का कार्य करते हैं।

मैं एक मसीही के रूप में अपनी छाप छोड़ना चाहता हूँ। मैं आर्थिक क्षेत्र में ईमानदार होना चाहता हूँ और अपने कर्तव्यों को पूरा करने में कभी लापरवाही नहीं करना चाहता। मैं किसी भी परिस्थिति में घूस देने या लेने से इनकार करूँगा। मैं केवल ईमानदारी के साथ ही पैसे कमाऊँगा। मैं भले कामों को करने के लिए तत्पर व ज़रूरतमन्द लोगों के साथ अपनी आशीषों को बाँटना चाहता हूँ। मैं इस संसार के लोगों से अलग होना चाहता और अपने जीवन व्यतीत करने के तरीके से परमेश्वर की महिमा करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना — प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 तीमुथीयुस 6:3-19 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1 तीमुथीयुस 6:3-19 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: रूत 1-4 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। प्रभुता: रोमियां 12:1-2। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।